दिल्ली-हरिनगर। 'स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज जन जागृति अभियान' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्री तंवर चन्द गहलोत, स्वास्थ्य उद्योग एवं शहरी विकास राज्यमंत्री सत्येन्द्र जैन, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. अमीरचंद तथा ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

सासाराम-विहार। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक अशोक सिंह, ब्र.कु.बबिता, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

कलायत-हरियाणा। जन्माष्टमी के कार्यक्रम में बी.जे.पी. के स्टेट वाइस प्रेसीडेंट धर्मपाल शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रेखा व ब्र.कु. सपना।

ऋषिकेश-उत्तराखण्ड। जन्माष्टमी कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आरती। साथ हैं डिग्री कॉलेज के प्रिन्सीपल पी.एस. महेश्वरी तथा त्रिवेणी लायन्स क्लब के प्रेसीडेंट अजय गोयल।

अबोहर-पंजाब। जन्माष्टमी पर आयोजित सुंदर कार्यक्रम के पश्चात् झाँकी के प्रतिभागी बच्चों के साथ ब्र.कु. पुष्पलता दीदी, ब्र.कु. दर्शना बहन तथा अन्य।

कपूरथला-पंजाब। जन्माष्टमी एवं स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अन्य भाई बहनें।

सिर्फ दृढ़ता ही नहीं, आध्यात्मिकता भी आवश्यक

- गतांक से आगे...

पाँचवें प्रकार के संस्कार हैं - दृढ़ता के संस्कार, विल पॉवर के संस्कार। व्यक्ति एक बार अपने मन के अंदर कोई बात ठान लेता है, तो उसको कोई नहीं रोक सकता है। वह इस प्रकार से आगे बढ़ने लगता है कि ये चारों प्रकार के संस्कार निष्क्रिय हो जाते हैं। इसलिए दृढ़ता की शक्ति को जागृत करना होगा। लेकिन कैसे करें? तो उसके लिए चाहिएपॉज़ीटिव एनर्जी। किसी भी शक्ति को जागृत करने के लिए एनर्जी चाहिए। सकारात्मक चिंतन की एनर्जी होती है। क्योंकि विचारों में इतनी शक्ति है कि इंसान जो चाहे कर सकता है, बन सकता है - ये विचारों की शक्ति है। इस प्रकार से जितना सकारात्मक विचारों का निर्माण मनुष्य करता है उतनी उसकी दृढ़ता की शक्ति जागृत होगी और दृढ़ता की शक्ति को जगाने के बाद वो आत्मा पर ही सीधा फोकस होती है। आत्मा पर फोकस होने से आत्मा की भीतर की क्षमता को बाहर ले आती है। उसके बाद आध्यात्मिक ज्ञान उसे दिशा प्रदान करता है। दृढ़ता की शक्ति से आत्मा की शक्ति को उजागर तो कर लिया लेकिन उसके बाद आध्यात्मिक ज्ञान, यह उसे दिशा प्रदान करती है कि कहाँ उसको चैनलाईज़ करना है। जब उसको आध्यात्मिकता के द्वारा दिशा प्राप्त होती है, तब वो व्यक्ति महानता के शिखर पर पहुँचता है।

जिस प्रकार स्वामी विवेकानंद सामान्य बालक नरेंद्र थे। लेकिन जब उनकी दृढ़ता की शक्ति को जागृत किया गया और आध्यात्मिकता के माध्यम से उनको दिशा मिली, तो वही नरेंद्र स्वामी विवेकानंद बन गए। इस तरह से उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व परिवर्तन हो गया। व्यक्तित्व के परिवर्तन से जितनी ऊँचाइयों को प्राप्त करना चाहें कर सकते हैं। लेकिन अगर आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, तो क्या होता है? व्यक्ति की दृढ़ता तो जागृत होती है और कई बार कई लोगों के अंदर ज़िद आ जाती है। उस ज़िद के कारण वो अपनी शक्तियों को उजागर तो कर लेते हैं। लेकिन दिशा हीनता के कारण वही व्यक्ति हिटलर या आतंकवादी भी बन जाता है। मरने-मारने की दृढ़ता उसके अंदर है, लेकिन वो शक्ति गलत दिशा में चैनलाईज़ हो गयी है। तो आज जिस तरह समाज के अंदर या विश्व के अंदर परिवर्तन नजर आने लगा है, यह परिवर्तन नकारात्मक शक्तियों को उजागर करता है। उनको भी उजागर करने के लिए निगेटिव विचारधारा बार-बार दी जाती है। जिससे उसका मानसिक स्वरूप जो है, वही बन जाता है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

वही मानसिकता उसकी विकसित हो जाती है। ये पाँच प्रकार के संस्कार हर आत्मा में होने के कारण एक आत्मा न मिले दूसरे से। क्योंकि जैसे जिसके संस्कार होते हैं वैसा ही उसका स्वभाव होता है। जैसा जिसका नेचर होता है वैसे ही उसके फीचर्स होते हैं। आज दुनिया के अंदर करोड़ों मनुष्य हैं, लेकिन एक के फीचर्स न मिलें दूसरे से, एक का नेचर न मिले दूसरे से, एक के संस्कार न मिले दूसरे से, एक का कर्म न मिले दूसरे से, इसलिए हर इंसान भिन्न है। हर आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, पर अपने शाश्वत् स्वरूप में हर आत्मा भिन्न है।

ये नहीं कि एक बहुत बड़ी आत्मा थी। उसके टुकड़े हो गये और सभी संसार में आ गए और फिर अंत में जाकर के वो सारे टुकड़े एक हो जायेंगे। आत्मा जब अजर, अमर, अविनाशी है, तो उसका शाश्वत् स्वरूप सदाकाल के लिए है ही है। वो चैतन्य शक्ति है। एनर्जी के लिए दुनिया में भी कहा जाता है कि ऊर्जा का न निर्माण किया जाता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। आत्मा जो स्पीरिचुअल एनर्जी है उसका भी न क्रियेशन और न डिस्ट्रक्शन किया जा सकता है। इसलिए वो समाने वाली बात भी नहीं है। हर आत्मा का अपना-अपना अस्तित्व है। इस संसार के अंदर सदाकाल के लिए है। जब वह इस संसार से जाती है, परमधाम में, व्यक्त से अव्यक्त होती है, तो भी वहाँ पर भी उनका एक शाश्वत् स्वरूप रहता ही है। हर आत्मा भिन्न है, इसलिए एक आत्मा न मिले दूसरे से। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

''सफलता'' की पोशाक कभी तैयार नहीं मिलती, इसे बनाने के लिए ''मेहनत'' का हुनर चाहिए.!

अनुमान गलत हो सकता है पर अनुभव कभी गलत नहीं होता। क्योंकि अनुमान हमारे मन की कल्पना है, और अनुभव हमारे जीवन की सीख।।

कभी भी लोगों की टीका टिप्पणी से घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि खेल में दर्शक ही शोर मचाते हैं खिलाड़ी नहीं...!

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 | airtel digital TV 678 | VIDEOCON d2h 497 | RELIANCE Digital TV 640

FASTWAY, GTPL, DEN, hathway, UCN, DigiCable, SITI

FREE DTH

Free to Air

KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver

LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact

Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,

Email- omshantimedia@bkivv.org,

Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।

विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।